इच्छा रखता हूँ। स्वाभाविक ही, इसके लिए मुझे वर्तमान राजनीतिक दायित्वों से स्वयं को मुक्त करना होगा और चुनाव राजनीति से संबंध विच्छेद करना होगा। मैं जानता हूँ कि यह कहने में जितना सरल, करने में उतना ही कठिन है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह मेरे इस कठिन व्रत पालन के संकल्प को आवश्यक बल प्रदान करे।

यहाँ प्रश्न उठ सकता है कि मेरे रचनात्मक प्रयोगों का स्वरूप एवं कार्यक्षेत्र क्या होगा? मेरी भावी कार्यप्रणाली क्या रहेगी? इस संबंध में मुझे यह जानकारी देते हुए प्रसन्नता होती है कि ईश्वरीय प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के गोण्डा जिले में कुछ माह पूर्व एक रचनात्मक प्रयोग प्रारंभ कर चुका हूँ। इन सब रचनात्मक गतिविधियों के केन्द्र का नाम जयप्रभा ग्राम रखा गया है।

''ग्रामोदय'' के इस प्रयोग के निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं : —

1. श्रम प्रधान विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीय आदर्श को ध्यान में रखते हुए कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन वृद्धि के लिए आधुनिक विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी को भारतीय स्थिति के अनुरूप विकसित करना।
2. आर्थिक विषमता को मिटाते हुए समृद्ध एवं आत्मनिर्भर ग्राम जीवन की रचना करने की दृष्टि से भूमि संबंधों का पुनर्निर्धारण करना एवं कुटीर उद्योगों को लोकप्रिय बनाना।
3. जातिवाद, साम्प्रदायिकता एवं अस्पृश्यता आदि के भेदों को मिटाकर समरस, सौहार्दपूर्ण एवं परस्पर सहयोगी सामाजिक जीवन का निर्माण करना।
4. प्रत्येक व्यक्ति की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए उसे नैतिक विकास के पथ पर बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण उत्पन्न करना।

व्यक्ति के आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास के विविध लक्ष्यों पर आधारित उपरोक्त कार्यक्रम को एक वाक्य अर्थात् ''सर्वाङ्गीण विकास के माध्यम से समग्र परिवर्तन'' के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

हमारा प्रयत्न है कि गोण्डा जिले के प्रयोग के माध्यम से कृषि विकास एवं ग्रामीण औद्योगीकरण के माध्यम से बेकारी उन्मूलन कर विषमतारहित समृद्धिशाली जनजीवन का विकास का अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करना। इसी प्रकार के अनेक अन्य प्रयोगों को प्रारंभ करने की आवश्यकता है। इन सभी प्रयोगों का दायित्व युवा-पीढ़ी के कन्धों पर सौंपना होगा। इसके लिए उसमें समाज के पिछड़े, उपेक्षित एवं दुर्बल वर्गों की जिन्दगी में झांकने, उनके साथ समरस होने एवं उनके सुख दुख में सहभागी बनने की तड़पन जगानी होगी। इस कार्य में मुझे कितनी सफलता मिल पायेगी, यह कह पाना कठिन है। किन्तु यदि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के इस कार्य को करते हुए मैं कुछ संवेदनशील युवा अन्तःकरणों को इन रचनात्मक प्रयोगों के अभियान के पथ पर आकर्षित कर सका तो मैं अपने जीवन को सार्थक मानूँगा और मेरे सन्तोष के लिए यही पर्याप्त होगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं स्वयं को रचनात्मक कार्यों के लिए समर्पित करता हूँ और राजनीतिक क्षेत्र के अपने उन सभी सहयोगियों से क्षमा मांगता हूँ जिन्हें अनजाने में मेरे किसी शब्द प्रयोग, व्यवहार या निर्णय से कोई मानसिक कष्ट पहुँचा हो। मुझे विश्वास है कि राष्ट्र सेवा के इस दुर्गम और अनजाने पथ पर कदम बढ़ाते समय मेरे आज तक के सभी सहयोगियों, मित्रों और समस्त देशवासियों के स्नेह और सहयोग का वरदहस्त मेरी पीठ पर सदैव विद्यमान रहेगा। अपनी जीवन-यात्रा के इस अन्तिम चरण में वही मेरा एकमात्र पाथेय होगा।

॥ जय भारत ॥